4

शिक्षा का गोल-गोले का खेल

प्रशांत अग्निहोत्री*

बच्चा हमारी संपत्ति नहीं है और न ही खिलौना। वह तो हमारे पास परमात्मा और मनुष्यता की धरोहर है। वह समग्र सृष्टि का वह अंश है जो स्वयं में पूर्ण है। वस्तुतः पूर्णता का ही अस्तित्व संपूर्ण चराचर में है। विभाजन या छोटे खंड तो हमारी सुविधा के लिए हैं। जीव-जड़-जगत का सारा प्रपंच (Phenominan) अपनी अखंडता और समग्रता में ही चलता है। सूरज, चंदा-तारे, पेड़, पक्षी, जानवर, हवा, धूप-छाँव सब स्वयं में पूर्ण होते हुए भी वास्तविक पूर्ण नहीं हैं। इन सबका समुच्चय, इनकी अविभाज्यता, इनकी अखंडता ही पूर्ण है। इस दृष्टि से ज्ञान तथा मानव संस्कृति वस्तुतः अखंड है। हम केवल सुविधा और समझ के लिए इन्हें बाँट लेते हैं लेकिन पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति तभी हो सकती है जब हम इनकी अखंडता को समझें।

हमने अपनी सुविधा के लिए, अपने बोध के लिए दिशाओं को पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में बाँट लिया है, परंतु यथार्थ में दिक् का ऐसा कोई विभाजन स्वयं में नहीं है। दिक् की समग्रता का बोध उसकी अविभाज्यता में ही है। ठीक ऐसे ही ज्ञान विषयों की अविभाज्यता का ही विषय है। छोटे बच्चों के लिए यह बात और भी कारगर है। प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के लिए ज्ञान की अखंडता महत्वपूर्ण है। ज्ञान को टुकड़ों में तोड़कर बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किए जाने पर वह उसे समग्रता के साथ ग्रहण नहीं कर पाते हैं।

वास्तव में ज्ञान एक तथा अविभाजित होता है। यह ठीक है कि प्रत्येक विषय पाठ्यक्रम में अपना महत्व रखता है तथा प्रत्येक विषय की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं परंतु यह भी सत्य है कि पाठ्यक्रम के सभी विषय एक ही वस्तु जिसे 'ज्ञान' कहते हैं, की विभिन्न शाखाएँ होती हैं। प्रत्येक विषय को स्वतंत्र सत्ता मानना भ्रामक है। केवल एक विषय संबंधी ज्ञान में ही तारतम्य नहीं है, बल्कि ज्ञान की विभिन्न धाराओं के बीच भी एक अटूट संबंध है। बच्चों को विभिन्न विषयों का पारस्परिक संबंध न बतला कर, इनको अलग-अलग मान कर शिक्षण करने से बच्चों को ज्ञान की अखंडता का भान नहीं हो पाता है। वे ज्ञान को उसकी पूर्णता के साथ ग्रहण नहीं कर पाते हैं।

आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने भी अपनी-अपनी दृष्टि से विषयों को उनके सह संबंधों के आधार पर प्रदान किए जाने की बात की है। हरबर्ट, शिलर, पार्कर, फ़्रॅबेल, डीवी आदि

* 312, मस्जिद गंज, शाहजहाँ पुर, उत्तर प्रदेश - 242001

शिक्षाशास्त्रियों ने विभिन्न विधाओं के द्वारा विषयों के सहसंबंध स्थापित करने पर बल दिया है। हरबर्ट ने अपने 'पूर्व ज्ञान के सिद्धांत' के द्वारा पुराने या पूर्व ज्ञान का संबंध नवीन ज्ञान से जोड़ने की बात कही है। उनके शिष्य शिलर ने इसी सिद्धांत के विकास में इतिहास को मुख्य विषय मानकर अन्य विषयों की शिक्षा का सिद्धांत प्रतिपादित किया। पार्कर ने प्रकृति विज्ञान को मुख्य विषय मानकर अन्य विषयों की शिक्षा इसके आधार पर देने की बात की है। फ्रोबेल ने बालक को स्वयं क्रिया के द्वारा संपूर्ण संसार की अलौकिक एकता का भान कराना उपयुक्त समझा। जॉन डीवी ने योजनाओं (Projects) के माध्यम से विभिन्न विषयों का सहसंबंध स्थापित करने का सिद्धांत दिया। महात्मा गांधी भी बुनियादी शिक्षा पद्धति के पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त विषयों को संबंधित करके पढ़ाने के पक्ष में थे। उन्होंने भाषा, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, सामान्य विज्ञान, कला आदि को समन्वित या संबंधित कर पढ़ाने पर बल दिया। इस दृष्टि से उन्होंने सहसंबंध के नियम (Law of Association) के महत्व को स्वीकार किया है।

समग्रकृति (Gestaltian) मनोवैज्ञानिकों ने भी प्रत्यक्षीकरण (Perception) के दो नियम दिए हैं (i) हमें किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण उनके पूर्ण रूप में होता है और (ii) हम एक वस्तु को किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा ग्रहण करते हैं। इन दो नियमों से स्पष्ट होता है कि ज्ञान समग्र है और वह एक पूर्ण इकाई है।

विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर और उससे भी पहले पूर्व प्राथमिक शिक्षा में इन सिद्धांतों की महत्ता बहुत अधिक है। प्राथमिक स्तर पर विषयों के सामान्य तत्वों की पहचान कर उन्हें समग्रता के साथ प्रस्तुत करने का काम अध्यापक का है। एक अध्यापक अपने आसपास के परिवेश से सामान्य एकीकरण के तत्व खोजकर उन्हें बच्चों की पाठ्यवस्तु के साथ बच्चों के समक्ष उनकी समग्रता और सहसंबद्धता के साथ जोड़कर रख सकता है।

पूर्व प्राथमिक स्तर पर जहाँ बच्चे को प्रारंभिक अक्षर और अंक ज्ञान के साथ उसके परिवेश या पर्यावरण की सामान्य जानकारी प्रदान की जाती है। कला, कविता और सृजनात्मकता के सूत्रों के साथ पिरोकर प्रदान किया गया ज्ञान रोचक व स्थायी हो सकता है।

एक अध्यापक गोले O की आकृति से प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाए-सिखाए जाने वाले विषयों को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

भाषा (अक्षरों) का ज्ञान–

हिंदी के अक्षरों की बनावट पर यदि अध्यापक सूक्ष्मता से ध्यान दे तो वह पहचान कर सकता है कि लगभग सभी अक्षरों के आकार में एक गोलाई छिपी है। वह

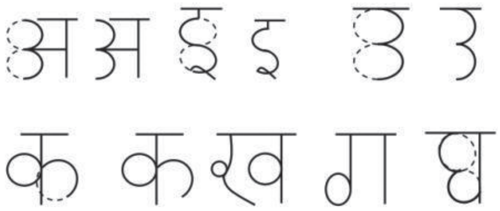

एक या दो गोलों को आसपास लिखकर, उसमें कुछ तरमीम कर या कुछ मिटाकर सभी हिंदी अक्षरों को सिखा सकता है। प्रारंभ में वे अक्षर लिए जा सकते हैं, जिन्हें बनाने के लिए गोले में थोड़ा सा ही परिवर्तन

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 21 28-12-2015 AM 11:56:47

करना होगा जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ट, ठ, द, प, ब, भ, म, व, श, ह, ज्ञ आदि। इसके बाद अन्य अक्षर सिखाए जा सकते हैं।

गणित के अंकों का ज्ञान–

गोले की आकृति के साथ अंकों, विशेष रूप से हिंदी अंकों का ज्ञान सहजता से कराया जा सकता है जैसे –

सभी गिनतियाँ गोले की आकृति के साथ बनायी जा सकती हैं। अध्यापक ऐसा करके जाने-

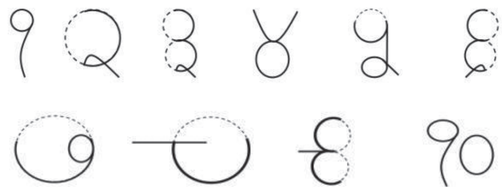

अनजाने ही बच्चों में अंकों की तारतम्यता, उनके स्वरूप की आंतरिक एकता का बोध करा सकता है।

सामाजिक (पर्यावरण) का ज्ञान–

अपने परिवेश या पर्यावरण की जानकारी उसके प्रति जिज्ञासा और समझ बच्चे के ज्ञान का आधार है। बच्चे के आस-पास के परिवेश से अध्यापक प्रारंभ में बच्चे को बताने-सिखाने के लिए उन वस्तुओं को चुन सकता है, जो गोल आकृति की होती हैं। ऐसी आकृतियों का चयन कर अध्यापक बच्चों को उन्हें बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है। इसके साथ ही बच्चों के बौद्धिक स्तर और समझ के अनुरूप उन्हें उन वस्तुओं से जुड़ी जानकारी प्रदान की जा सकती है। जैसे –

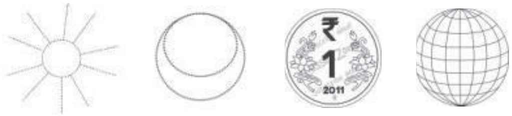

कला का ज्ञान–

कला आनंद से उद्वेलित आत्मा की अभिव्यंजना है। मनुष्य जब अपने हृदय के स्वाभाविक आनंद से प्रेरित होकर अपने हृदयगत भावों को प्रकट करना चाहता है तभी कला की उत्पत्ति होती है। उसका बाह्य रूप सौंदर्य है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जब सौंदर्य का प्रवेश होता है तभी कला की सच्ची उपासना होती है।

कला जीवन की जीवंतता के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी सीखने की प्रक्रिया में कला और सौंदर्यबोध को समेकित करने की बात कहती है। बच्चे के लिए कुछ बनाना, कुछ रचना आनंददायक अनुभव है। इसे शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। सिर्फ़ बच्चे की आँख में कुछ नया रचने की चमक के साथ इसे महसूस किया जा सकता है। विविध चित्रों में जो गोले का प्रयोग कर अध्यापक बच्चों को सिखा सकते हैं, बच्चे की प्रारंभिक चित्रकला के आधार हो सकते हैं। जैसे –

अध्यापक ऐसे विविध चित्रों के साथ मिट्टी की गोल आकृतियों के रूप में बच्चों से कुछ खिलौने बनवा सकता है जिससे उनमें कौशल और कलात्मकता के तत्वों का बोध विकसित किया जा सकता है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 22 28-12-2015 AM 11:56:47

कविता –

कविता हमेशा से ही बच्चों की पसंदीदा विषय रही है। उसकी गति, उसकी लय, उसकी ताल, सहज स्मृति गुण कविता के महत्व को शिक्षा में सदैव से स्वीकारते रहे हैं। गोले के इस सीखने-सिखाने के क्रम में अध्यापक वह कविता भी बच्चों को सिखा सकते हैं जो गोले या गोल आकृति पर आधारित हो। जैसे-

मम्मी जी की रोटी गोल।
पापा जी का पैसा गोल।
दादी जी की ऐनक गोल।
दादा जी का चश्मा गोल।
मैडम कहतीं दुनिया गोल,
बच्चे कहते लड्डू गोल।

अध्यापक बच्चों को इसके माध्यम से नयी-नयी वस्तुओं की जानकारी दे सकते हैं। वे नयी कविताओं को गढ़ सकते हैं, जिसमें गोल आकृति की चर्चा हो।

सृजनात्मकता की शिक्षा –

सृजनात्मकता ईश्वर का गुण है। बच्चा भी सृजनात्मक होता है, वह कुछ नया रचना चाहता है, वह नया रच कर खुश होता है। इस दृष्टि से सृजन आनंद है और आनंद जीवन। बचपन भरपूर आनंद से जीवन जीने का अवसर। शिक्षा या शिक्षालय को उससे यह अवसर छीनने का कोई हक नहीं है। अध्यापक को चाहिए कि वह बच्चे को रचने, सृजन करने का पूरा अवसर प्रदान करे। यह अवसर उसमें चिंतन करने, कुछ मौलिक रचने और रचने की लयात्मकता के साथ तालमेल बिठाने में सहायता करता है। एक अध्यापक अपनी कक्षा में विविध आकार और रंगों के कागज़ या गत्ते के टुकड़े देकर बच्चे को कुछ नयी आकृतियाँ रचने के लिए प्रेरित कर सकता है। जैसे –

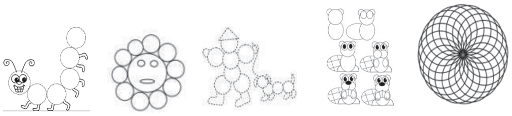

बच्चे जब इस तरह की विविध आकृतियाँ रंग-बिरंगे गोलों के माध्यम से बनाएँगे और अध्यापक को दिखाएँगें उस समय अध्यापक द्वारा दिया गया समर्थन उन्हें और नया रचने को सोचने की ओर उन्मुख करेगा।

एक साधारण से गोले के माध्यम से न जाने कितनी चीज़ें अध्यापक अपने बच्चों को सिखा सकता है। वैसे भी ज्ञान के जो अनेक रूप होते हैं- शिल्प, खेलकूद, सौंदर्यबोध, कौशल, रचनात्मकता इन सबका समावेश इस प्रकार के शिक्षण में हो जाता है। यह रटंत पढ़ाई से मुक्ति, बाल संवर्द्धन, सृजनात्मकता के पोषण, बाल केंद्रित शिक्षा, बच्चे को स्वयं करके सीखने की भावना के अनुरूप, लचीला और विद्यार्थी द्वारा ज्ञान के स्वयं सृजन के आदर्शात्मक शिक्षण लक्ष्यों को भी पूर्ण करता है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षण के ऐसे प्रयोग केवल पूर्व प्राथमिक स्तर पर ही किए जा सकते हैं। विविध शैक्षिक स्तरों के अनुरूप विषयों और प्रकरणों के सामान्य तत्वों को खोजकर, संयोगीकरण की पद्धति से शिक्षा दी जा सकती है। प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक और माध्यमिक स्तर पर भी इसी एकीकरण की पद्धति का प्रयोग कर शिक्षण किया जा सकता है। पूर्व माध्यमिक स्तर पर 'बद्रीनाथ की यात्रा' नामक गद्य पाठ पढ़ाते समय भूगोल और इतिहास जैसे विषयों की शिक्षा दी जा सकती है। साथ ही व्याकरण शिक्षण पर भी

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 23 28-12-2015 AM 11:56:47

ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। एकीकरण शिक्षण सिद्धांत के जनक हरबर्ट के शिष्य शिलर ने शिक्षण में केंद्रीयकरण सिद्धांत की चर्चा की और बताया कि समस्त पाठ्यक्रम का एक विषय केंद्रीय विषय होना चाहिए और शेष विषय उसी के माध्यम से पढ़ाने चाहिए। शिलर के अनुसार इतिहास केंद्रीय विषय हो सकता है। इतिहास को केंद्र बनाकर भाषा, भूगोल, समाजशास्त्र, विज्ञान, गणित एवं चित्रकला आदि विषय उसी के माध्यम से पढ़ाए जा सकते हैं। इस क्रिया से अनेक विषयों का बोझ कम हो जाएगा। छोटे-छोटे विषयों में ज्ञान नहीं बढ़ेगा, पाठ रोचक होगा और सभी विषयों का समन्वय होगा, जिससे ज्ञान को उसकी समग्र समझ के साथ विद्यार्थी को ग्रहण करने की सामर्थ्य बढ़ेगी। निश्यच ही 'केंद्रीयकरण का सिद्धांत' सहसंबंध की सर्वोच्चता है। पार्कर विज्ञान को, डी गर्भो अर्थशास्त्रों को तो कुछ शिक्षाशास्त्री भाषा को शिक्षण का आधार बनाने पर बल देते हैं। अस्तु किस विषय को केंद्र बनाया जाए यह निर्णय अध्यापक पर छोड़ दिया जाना चाहिए परंतु शिक्षण की पूर्णता और ज्ञान की समग्र समझ के लिए समुच्चय के चयन के आधार पर शिक्षण किया जाना चाहिए। ऐसा उन्हीं विषयों के साथ किया जाना चाहिए जिनमें सरलता, स्पष्टता और बोधगम्यता की विशेष गुंजाइश हो।

❑❑❑

संदर्भ

दुबे, मिलाप चंद्र. 1964. *बुनियादी शिक्षा और नवीन समाज व्यवस्था*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

बधेका, गिजुभाई. 2005. *प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा पद्धतियाँ*. गीतांजलि प्रकाशन, जयपुर

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. 2005. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

वार्नर रूबी एच. 2000. *प्राथमिक स्कूल की अध्यापक विधियाँ*. आत्माराम एंड संस, दिल्ली

शर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद. 1972. *विश्व के महान शिक्षा शास्त्री*. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 24 28-12-2015 AM 11:56:47